TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4442**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥५६॥ ॥ श्रीपंचपरमेष्ठि ध्यानम् ॥ समवंत श्रीमहावीरदेव सुरासुरविहितसेव । तेहनै श्रीगौतमस्वामि वडागणधर वर्णक । तेश्री भगवंत
नइ पूछी श्रीगौतमगामि सुगामविद । एकरतां श्रीभग[illegible]दसइ राजगृही नगरीयइ वैभारगिरसमीपइ गुणसिलइ चैत्यइ
समवसर्या ॥ वनपालकें वधाई दीधी । श्रेणिकराजा प्रतें तिहांस्युं अंतेगिणीसेना परवर्या आवइ । तिहां पंचाभिगमसाच
वी विनयपूर्वक वांदइ । यथायोग्यस्थानकें बैसइ । गौतमउपदेसदाइ श्रीसिद्धचक्रनो महिमा कहीवखाणइ नवपदना
ध्यान । मनवांछा सिद्धि निमित्तइ । सूत्रमत्रै वलविनइ ऊपको धउफलइ नहो । तेहणप्रकारइ ध्यानकी जइ तत्रमवं
सिद्धिपामइ तिहां श्रीश्रेणिकराजा प्रश्नइ । इणप्रकारइ किणही आराधीनइ किणही फलपाम्या । तिहां श्रीगौतम
कहइ करी इद्धावे । प्रत्यक्षकहीदेवा मैं श्रीसिद्धचक्रमइणासुंदरीयै आराध्य । जुनइ श्रीपालराजा प्रमुख ७०० को
ढीनउ कोढ गमावी पर्वसिद्धिपामी । तिवारइ श्रेणिक कहतें पूर्वदारमा कइस । कुणश्रीपाल किहांकमनुक्ष किमआराध्यो ॥ श्रीगौ॰
तम कहइ रत्नक्षेत्र इस भरतक्षेत्र मालवदेश वर्णक । तिहां उज्जेणीनगरी वर्णक । तिहां प्रजापाल राजा॰ राज्यपालइ । तेहराजानइ सौभाग्यसुंद
रीनामइ रूपसुंदरी राणीद्वय॰ रूप श्राविका । [illegible] महेश्वर इ मिथ्यात्वी याँ बइ जैन इ माहामाहि धर्मनी पुस्याकरतां मत्सरपणउ
प्रवर्त्तइ । दिहनमां धर्मकथा करतोरहइ । तिवारइ बिहुंराणीनइ पुत्री २ । सूरसुंदरी मइणासुंदरी । मोटा॰ पुत्री सुरसुंदरी
तेवेदान्ताध्यापकनी पासिभणावी पाती । सुर॰ । सिवस्वामिकना पंडितना पासेभणी सर्वकलानीजाण थई । पिलधर्मसा
स्त्र विनइ कहीआपणी मानाभावही थई । अनइ मइणासुंदरी पासइ जैनना वावी आवी [illegible] सुबोधहोतकवी वीकरी । जिवी माहि
तीजोकरी ॥ जइ वजपन । जेह वजवन ॥ एकदा राजा सभायइ बैठा । थको बेबाईनइ तेडावी । तिसी माथइ हाथ दई पाम्यइ बइसा
डी । सालिवारी वातपूछी । तिवारइ करसी । प्रथम सर्वशास्त्र कलामाहि बांधी । राजा । यइ परीक्षा निमित्त समस्या पूछी । जउ ऊ नरयाइ
तउ आपनइ तरि कि [illegible] राजा । राजा श्रापूर्णकरइ । सुरसुंदरी मइ कहइ ने वेदीयांबिहुं मइ कहइ सामस्या तेगीहरइ । केंहुउ
प्रवमकहइ । उत्तर वज्रइ । हिवसुरसुंदरी सिध्यायमनइवें वरनग । [illegible] की । कुतोपली समस्यापूरइ ॥ धनकुबे 1

[illegible] इण रोग रहित निर्वेह। प्रणवइ आहपेला वृष्टो। [illegible] ॥१॥ राजा [illegible] हिति हर्षित थया। राजा
[illegible] वनाएणे। [illegible] इमी जणावी॥ हिवइ [illegible] विनयवंत हित लाजइ करी [illegible] इमथकी।
[illegible] सुंदरी कहइ। [illegible] विनयविवेक [illegible] परम [illegible]
[illegible] ॥ २ ति यइरी माता पर [illegible] हर्ष [illegible] राजा [illegible] हर्षवंत थया॥ [illegible]
[illegible] ॥ तिणे अवसर [illegible] राजा [illegible] पुत्र [illegible] राजा [illegible]
[illegible] सुरसुंदरी [illegible] राजा [illegible] राजा [illegible] तरइ
कलो [illegible] वर दत [illegible] वरी [illegible] रतन [illegible] ॥ [illegible] राजा [illegible]
सुंदरी [illegible] ॥ [illegible] बापजी कुलवंत कन्या [illegible] वर [illegible] वर्ध [illegible]
[illegible] कीधी [illegible] इहां बापक
[illegible] राजा [illegible] दइन [illegible] रयण [illegible]
[illegible] राजा थइ। [illegible]
[illegible] राजा [illegible] राजा [illegible] रथ थया। नगर [illegible] कीधी॥ [illegible]
[illegible] राजा [illegible] एक [illegible] आश्चर्य
[illegible] एक [illegible] कोढी [illegible]
[illegible] एक बालक [illegible] वरस [illegible] बरस [illegible]
[illegible] कोढ [illegible] आये
[illegible] राजा [illegible] कोढ [illegible]

बेति कुअंगर [illegible] इम [illegible] ७०० [illegible] राजा [illegible]
[illegible] राजा [illegible]
[illegible] कोढी [illegible] राजा [illegible] कोढी एक [illegible]
[illegible] राजा [illegible] एकक [illegible] दान दीजइ [illegible] कल्पवृक्ष [illegible] दीजइ। [illegible]
[illegible] प्रार्थना [illegible] मयणा [illegible]
[illegible] राजा [illegible]
[illegible] प्रार्थना [illegible] राजा [illegible] कन्या [illegible] नगर
[illegible] मदन [illegible] करम [illegible] कीध [illegible]
[illegible] फल [illegible]
[illegible] राजा [illegible] कोढी [illegible]
[illegible] मदन [illegible] महाराज [illegible] हर्षवंत थया [illegible] कोढी [illegible]
[illegible] लोक [illegible] राजा [illegible]
[illegible] कोढी [illegible] नगर [illegible] राजा [illegible]
[illegible] मदन [illegible] राजा [illegible] मयणा [illegible]
[illegible] राजा [illegible] सुरसुंदरी [illegible] बापक [illegible]
[illegible] एक [illegible]
[illegible] कोढी [illegible] राजा [illegible] २

तीसुंदरी। [illegible] नीती तह तुंगी की। ॥ ॐ आपणअपिताते हनद्दकोपकरा [illegible] । [illegible] कोपनकरमतउ [illegible] नैमनका [illegible]
ला। [illegible] तुंगीकी। ॥ [illegible] । वान्हा [illegible] । [illegible] मनजा [illegible] । [illegible]
[illegible] देवपरमपन्त्रं ॥ [illegible] । [illegible] । [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] २

[illegible] 3

दती। पतिसेवा करती। रूपसुंदरी दीठी। देखी नइ मनमइ दुःख धरिउ अपाप्यउ। कुलमरजादा छंडीकी आपणुं पापं करनी। लोकमां
गयो। रूपनइ किल रूपमनवामरइ हइ। एवं नमस्कार प्रभावे ना।। इण उस्त्रां मेली एरूपवंत पुरुष मली कीधउ। निर्मलकु
लनइ कलंक लगायउ। कुस त्र कुलमेहणउ।। एवे एमही वचन सांभली कही पिता ज्यो वेनका मयणा लाज कि सुनकरइ इ
बइरी बालानी। मइ ता ये मनरी वात जाणी आगे आवी हमारा तक्का इ इतारउनकरइ। एभ्रम मनमा हरखउ अमाइ छेह। बीज
हो नइ नस्तु जदैत। उलटि अहइ वनावनइ। जइ हुं गाढा कस्मात।। एम। पटरी नही उत्र एका मझावइ तउ। बेती आघे
मिलवइ मे णारी मात्र बोली। हिंसुंदरिता हरी धर्मी नइ परस्पर देखा हरने। उत्तनी रोग थयउ। धर्म आ। एह वन कस्य इ आवि
नरी। विप्रवेहसुपानी धर्मी नइ कहइ। हे बेटा आवी तउ अनरिजसपरबी। किस कोइ। तिवारइ मइ लाकहइ। इहां देहरा मांह
मस्यो मनकारवी। आमात नाला गइ आदि रंगी वउ। जिम मलउ बिचरा पुज्यवा तक ऊ। किम कहुं तिम मगनी वात
पिछ बकरी कही। एआ राय भाई मइ कम्यउ। हिवइ रूपसुंदरी कुमरनी माता नइ इ इमइ एहुनावेमनी वात कही। कुमरनी
मुनइ सम्मा लिवा थाति हे। कुमरनी माता कहे। आँगादेस नइ विषइ चंपापुरी वर्ण। तिहां श्री हरधराजा तेहनी जाया कि
मलप्रभा। तेहनउ पुत्र श्रीपालकुमर। तेहनइ पिता नइ बालक थकां मतिसागर मरणपाम्यउ। मतिसागर मुंहतइ श्रीपा
लनइ पाटे थाप्यउ। हिवइ श्रीपालनइ काको अजितसेन तेणइ कटक मेली चंदकवी राजली धउ। राजमइ लेवा ण्युउ
एह वेमाद्री नइ कटक राउ कस्। तिणइ कमल प्रभा यह जाण्यउ। कुकडा मइ तउ त्रलेइ। जीकणरा लीनाठी। जीवनलगो तुडु
एव कउ जाली देसन्ना मतामर लनवलप्रभपाली उंचरा ली मुषी जिसी नाठी था की वीपडय मन वाहि बडा मर पाटणरूठै
एह वा माहि जाती १०० कोढीनी पकी मिली। तिस्त्रां मइ जइ पाही। तिएक मनवेपालकडा ने वी जीब्रउ। वीमा ता थीवा हरा ३
आपकी। तिस्त्रां मइ पगत्याथउ विलक्का दीमउडउं छनी कदवी पाळा नीठा। श्रीएनमस्य।। तिस्त्रां माहरहता।

कुस्समेपरी रहतेवरकोढ थयउ। इमकूत्र तुंकमेवडो जी कुमर आव्यउ। तेहनी माता कमलप्रभा वैद्यजोवा नाली कोसांबीगई। श्री
पाले माहरी पुत्री परणी। तेहनइ प्रभावि नीरोग थयउ। ते कुंकम लप्रभा धाधनेवच मेइ हां आवी मिली। आवात एहमो वइ मनी आ
वात जाणि वी। तिवारइ तो रूपसुंदरी हरषित थई। आपणे मनमइ पुण्य पाल गोत्री नइ कन्या तिवारे ते कुमर मेलाके मनसुं तोष
हरघुनि तेही पुण्य जानम्मे वाकरतयक। एक दा प्रस्तावे राजा नइ वाजी जणी ति णमा रंगिनी कन्या। तानरस्या केडाला।
तिमे पस्तावे श्रीपालने मेणामाहिलतरा जायेदीठा। राजा मनमइ चीलव्यउ। बेटी पुत्र आकारि जिकी धउ। वचाति तरही। पनइ
नूकी। तिमइ मा ते वात सामली तिवारइ पुण्य पालइ महाराजा आ गइ पुद्दावाच उ। यांम लीवातमा तक ता। चंपापुरी पीहर
थराजा नो पुत्र नीकल्यो कोढी मेग नइ थयो। मयणा यह सिद्धचक्र सेवी को ढगमायउ। राजा दल सालीमल विपुल आवर्क
वीवाह विधि मावी धरे मला। पुण्य सुं करी। एकाले मनमइ श्रीपाल हाथी ऊपर बसइ मा धका नगरमाहि फिरइ छइ। लोक देखीने
कहे। एहु बजादि पमदू पधारी। इंश्रावला री। एकुण छइ। तिवारइ बीजइ कलउ। मतो रहती इक्षीपाल तनउ जमाइ। एहव
उ वचन श्रीपाल कुमरइ सांभल्युउ। मनमइ दिलगीर थया। अथ धमण चकी अ धमा। मुनइ को इ नजाणे। वली माहरा पिता
यहकरी विणसुने को इ नजाले। माहला जनजाण हो। सुसर हकुंकरी कुंसुने ला कजाणइ छै। यतः उत्तमा निगुण खाता
मध्यम तो हणुणहे। अधम सरापित्रा मानु गे त्ता अधमा धम सुसरे त्ता।।१ एह वउ मनमइ विषइ श्रमरस आणी। अहकारियमइ
मातावस्त्रें मेरे लागु की। को धइ घडगालेइ परदेस जाणी जापनी का कुरिवा नइ चाल्यउ। एक ण्एक हिवइ देस ओहीपर देस एकु
वनमइ पहउ। ४ यतः देसाटन पं।। दी सविवस्तु निरुी। जातिक लइस जाउ लेकलोग्री विख्या।। आम्पालेव क तिहां। हिं
कोइ तल प्रहाउ।।२ हिवइ४२ तिहि एक सरोवरि देखने विचइ एक मठ। छइ हव वइठो विमिस्य इम इमन वाम ना ही। तिहं
कुमर तेहनइ पाव गया। तिय रह भनेत्र लावि नउ लीमउ उ। तिवारइ मठ हे अपहे कस्यां छो विद्या साधकतोपि लउउ
रणसाधक को इ नही। कुमर कहै जोसे वक ऊपर बाइ। एनि प्रक सपकार्य थउ। तिहे वि विद्यासाधउ। मन हुई पध मोथ ४

थयो। मेंढ ऊपरि दीधी एक पाणी भरइ कुंभ तारा घइ। बीजी येष्ठी आरतन लागे एहवी लेई आघउ चाल्यउ। आगे गिरि वन नदी
देषता देश फिरतउ। एक वन उपवन तिहां थइ तउ गुफा माहि एक अति वृद्ध देखउ। ते रस कर्म करतउ आप। सो अरस सिद्धि
करइ पिण थइ नहीं। तिहां कुमर सिद्धि साधिक करी। परि बरि आगनी पनउ। कार्यसिद्धि थई। सो नउ देणउ मां
ग्यउ। कुमर नवि लीधउ। रस वदर मवि विद्या दीधी॥ तिवार पछी अनेक गाम प्रासाद देखतउ। देश परदेश फिरतउ। नर वर
नगरइ आव्यउ। तिहां रत्न नाथक पूरा वृक्ष हकारी ऊकके रहइ तेह नाम नेम घ्यहइ रवना। आपठ दइ किवरइ। तिहां कोसांबी
थ कोथ बल नाम भव महा धनवंत रहता मोधउ व्यापार इ आव्यउ। तिण व्यापार इ घल उ तल तपामी पांव मसइ महा वत्ता दीप नाली
नइ कीधा। दिवइस्तु जपहल रत्न आ इ वहा व्यापिण वा लइ नहीं। तिवार इ धवल सेठ इस्पी कोछरी नइ सरु उद्यमे सुरव तिण बलि
× मज्ञनै × दीधी तिकाणी कोछरी कही जइ। पछइ किण ही नइ वतइ नहीं उवा आगम्या तक हे मूंज ऊपर वीतिल ऊ। तस्यी को छरी कहे जीए
कवि तीस लक्षण उ रूप धवल तिहां उ। तेह एकाकी नचालइ। तिवारइ धूय आवि करि राजा नइ वीनवीउ। एहवउ पुरुषके अमा इतो
देषन गरटा ली कोइ पुरुष हंसु छ घकं देखि कि ली इ आवउ। तिवार धवल सेठ वना पुरुष नगरमइ फिरतो एक श्रीपाल दीठउ। आवि नम
स्कार करी तेड़ी लाविउ। श्रीपाल नइ दिघा दिसिग मान्या। पछइ करी ने तिण इ धवलेइ सुजी तेजाली साथ बेगला गउ। माहि नाहि
ला कोइ आवी जिम घा नइ प्रसाव इ वाल इ दीप नइ। श्रीपाल आवी वाहण चलाव्या। ऊपरइ देवी थइ सा ऊभा। नवपद ध्यान थ
की ना गिरा धुय धवल विस्मय पाम्यो। परुम इ साथ इ ली अइ। पणउ आदरकरी श्रीपाल साथइ वाल्यउ। घ छर कू लइ गया। वार
वहला। वाह ननि हा पाणी नइ गया। तिवार इ बबर कू लधणी दाणरा मागिवा लागा। धवल न घइ। तिहां धवल नइ बांध सहु ज्ञा सगु
लट धवल मुंकी नइ नाठा। एकू धवल रान लो। श्रीपाल इ नेम ज्ञाली बंधकी धउ। ल्ष्मी आपरा वा वहइ। बबर कूल धणी। म
हाकाल नइ नइ छाती ऊपर इ आपाणइ गामि आण्यो। घरि आयउ बहुल वउ नहीं। महाकाल नइ मैं कपउ। तिणइ माट उ बकथ ४
आणी। मदनसेना इ पुत्री परणा वी। ही स्त्रीर घणा धन इ क आ इरीथा एक जीम ऊवी। छ एन क दीधउ। अधिवइत १००००। सुन

२ श्रीपाल नम्ये कथय। हि यै बबरकूल ना नवा मीनेह मो ऊमाइथ को प्रवे श्री॥ जिम २ पन ने इस्पी वरहा ति मे जा लग्यु। जिहां जा यै लिहां
किइ पामे ऊपर वंतहीव। धवल वे व न्ने वेवी लीधा। पर्व धवल के कपी का धी। आपरनी वस्त्रा पिण। एक दा नाट कम मोडे। तिहां अने
क नव बुप्पा किरपा। तिके एक ऊप पुरुष मी। कुमर समी पत्र इवा ना टक पूरइ जांस ऊ कुमर इस ऊठी किहां थी आव्या। ते कहे रास्नु
दि टप वत नम मी पारत्न ऊ वयु ऊ। तिहां किणा कनक केतुना म विद्याधर राजा। कनक माला राणी। तेहनइ थि ऊ पुत्र रूप रि
एक ऊ श्री। मदनमंजूषा नाम। हाथ सुद्रग सुवर्ण ना नासमवसरण। बी॥ मा इनी मद्दी अत बहु दता। ठिमांगी नाम नइ पर घरि की। विलापर
मनइ ऊ श्रावक धर्म। तिहां एक प्रश्न दिन मेवंत। राजा नइ इहू वजे मैं नाम अत ज्यो। तिहां मदनमंजूषा यइ महा दुःखा मैं नाविडी
अनक राजा राणी। तिहां हुहो वा आ व्या डो। तिहां मू ऊपर विषम आ रती करी ते मैं जूषा वा हिर आवणा मर अइ। तिम इ देहरा
नी कमाड ऊघा णा। किणा ही थी ऊघ्या नहीं। उपाय करी वार राजी राणी यइ नर तेने व लिया कूल पिण ऊघ इनइ नहीं। राजा
राणी दुष पामि वा लागा। तिण समइ राउ इ आ का सवाणी। हुइ जाइ। देखत म दजे पकी म री। नर वर दोस नकोइ। जिण कार ण
जिण हर जम्यउ। ते मिसुण आ जद्र कोइ हार राजा राणी आ दिदेइ मगला म हु छ ऊषि दिन थया। तिण इ वली देव वाणी आका
सवाणी। जिण मनदी वइ होइ प्रइ। जिण हर खुक इ वार। आ जन मय ण मंजूषा को छे ते ज सदार॥२ तिम वली देववाणी
थई। जे हिम इ च नि ठौल मानि थी। जीव के इ पर दिठि थी। मा म इ ति रा त इस्यु न र हे। आ वे मा निश्च इव हिं॥२ पहवउ अम दरा ऊ आ छ ऊ आमी।
नली नव ल अा पछ आ। पण इका पि घुर घुह ता। म नु ष्य देव ऊ ह रत नेआ वइ पिण वार न ऊ घ र इ। एहवउ मैं ल ती। ऊपर थ वत न इ
कसउ। धवल न कल उ इ ली नी पाणी थी मैं ज नहीं। पो ता रा का म ऊ ऊ स्पु। श्रीपाल पोता रा परिवा र स्पि नि तिहां आ व्य उ। म हे रीज व धि
ऊ न व लि हां ऊ हल ऊ। दे र इ दे व ऊ हा रंजा लि वना कर तो। आ वि नी वला द ष घर न। वा र ण ऊ घ स्पा॥ ऊ ऊ को द व ऊ हा स्या
स र्व जन र ष्या। तिहां स्पि क ब इ वा घ का। वा रुण मा धु आ ज्या य इ। आ नि मि स्त्रि। तिण इ स्पी थइ न व पद आ नंद सान दीधी। एनवप
द आ रा ध इ स्पी पाल नी पर इ मन व। ऊ तम। मैं रा जी इ स्त्री आ कू ण श्रीपाल। तिवार इ मन घ इ क हे आ व श्रीपाल बैठ उ। हं आ र कं वा मीम
दन मंजूषा दी धी। शुन मन दी इज दी धा। वीवाह करी न ह। तिम इ वे त्र मी फ णा। यउ। विह्वय क पूजा विधि मंत मांडी। आ र थी

नइ नासा॥ तिसै प्रस्तावै राजा आगै वीनवइ। महाराज व्याकारी वेरी मै पुत्री। मोटी वीवाही नहीं कीधी॥ राजा जाक मकी उछव
कीजै तिहां। ते हने वे भर्दक करउ। श्रीपाल रूकमि उ। एक वेला चारन आविदेष उ। ते चारन आव्या उ। कुमर इ ते बोलाव्या उ। धवल मे
उ। कुमर इ रघुं काव्य। जिम ये च वाहण थका। तिम कीधो तिम ही थया॥ छिवइ एकदा प्रस्तावइ धवलइ मागी। धवल कन्या हिलद्र
वहणपूरि न इवा लाग्या। दरी आ पीछि आव्या। धवल नउ वि[illegible]कउ। किसुं दूर। [illegible]। किणन उ मनन [illegible] करइ। [illegible]॥ एहवो देषी
धवल घणो बोल्या। आमजलपि करतो। जलकुमारने इ। कुमर मनइ नउ कृत पाट हइ। धवल लग पूछ्या तिम मन्त्र उ वाहण कहइ धबा इ। कुमर
तिलक परि आव्या उ। नूटी माइ पाल्य उ। वमुडमा हिरि माण्डु [illegible] कालेगय उ। ने वपदमा मरनाथ का। मन रमिष्ठ रमइ मुपरि व पाका
व नेरतो॥ १ एक लषणा हिं नउ कु कुणाक्षा वइगय उ। कुमर तरी वार इम्मा मतउ। [illegible] नाट मिल्या। कुमर पूछ्यो ता मकुल कांइ। द्वी
आव्या। ति वार इक सो अवतणना गइ उ। आ मत उ। कुमर व पूछ्यो उ कुमर व कलय [illegible] एक कुणदेश मइ इ वा ल उन गो र। वसु पो लराजा। ति
सु नर पुत्र [illegible] मपु लहटइ। इम कहीन। इणवा मिन उ कुमरपक कांइ की आ। वइ ति ण नमधा। हस्त वही दीधी आ। लिख उ। तिण नगर
वइ गा। थइ आपना रथा। आ। कुमर इ जाण्य उ। अरुंग मठ पवा बी। ऊपणार लिम आवइ इ उ। सुखला लिखी थइ उ षकणी करइ। डुब लिब
यइ उ पइ ह। पूछ उ मने वेष्या रिणी। माटिन को किकोइ॥ राजा आ मा इ आप्य उ। राजा घण उ आदर दइ कीय उ। आम्है तिमिरी नइ इम
ह्या उ। अपार इ कन्या नइ वर जो उ। इ तिमिरी करस उ। कांइ पवइ नो सभु इ नरइ आजथी ७ दिन आ वर्णो अपूक इ त ता म इ तेउ त्र
मकन्या वनधारी। तिको आज थी था दिन ७ मे केन उमा मि नइ आया। पीत्री मण करा। वमा रा यइ। ने जमा इ थ या। घण उ धवल ता
स्त्री इ दीध उ। तियै राजा कन्या उ वली मा गउ। कुमर कुमर त नो लदेवन कि नइ इ। नेमा इ नइ इ थइ राजा प्रमाण कीध उ॥ छिवइ ते
वर्णा धवल इ कुमर ने मा प्य उ। तिम्मै प्रव इ कोलाहल थय उ। धवल कुमर पाटरूप दमुउ आवी आ। विलाप नइ आवी वइ पा
थया। अविलणमे इ। हार वथाय उ। धवल कहवा लाग उ। कुमर कर उ। जनम वाड प्रबन्धा कि बी अपमर थइ। थे नि वी नर ते। इ सै
कलपइ या लउ कुमर न मुश्रापउ। इश्येही कए का मकीध उ। एहनी दु हीन उ बिवो लन उ। छिवइ आम्हे नइ आ ष्या राणी लनइ कुमराप
स्या॥ घण उ कुमर ती व्र व नइ। तिमइ समुद्र मइ पवन जो नजा गउ। मकाडध का नथय उ। वीहण उ तिण था मउ। तिमइ समुद्रधी 5

>इउप इ वरगन उतिवै आ >उपइप<
निय हिन कुत्रपा उमा तिनइ धनैं चक्रेश्वरी देवी आवी। एह वत उ कहइ। अहो माणिनइ लि नवा आम्र न राज पाल। तिहां एहवी मनी
इह। लिह तन्त्र के अपइ वुमा मा उ। एवा नमुक्र नही। तौ दा ली। मनी प्रगम चक्रेश्वरी माता करइ॥ श्री वा ल्क उन्नमाल उ। मोटी वि
रि उ नाव न। तिम वै न मा ल आनरइ। मिलमप इ मन ध रि हैता॥ १ मयणा कै इ परि ऊ विय। परमल बाजारि का लवी वि इ कु
मर्दन इम्ही पद्दि। आ पी मुर न गमा ल॥ २ थान इ को इ न द तिम्बि इमा लो लणइ अम। एमक होवक्रेश्वरी छ हती आपण कोम
॥ २ इमहवा हणउ अपइ वर्ति तन आ घाघर न वी मा॥ वली शेष वलड़ सपरिणामि क्षीवे मकरी। मइणा पास इ अम्या उ। ति
वइमा को पत्रा वइ आ तो पथइ। छिवइ वहण हीउ कुमल प्रवहण धवल नना कुंकण आ मु॥ ति हा धवल र जा नइ मिल वा गया। ते इणे हि
कुमइ। तिहां श्री पालन इ राजा पासि पइ श्रति आ मन इ दी तो। राजा ड कन्म की ध उ आपणइ ते बोलदी ध उ। ते धवल वमका उ। तिहां थी मिली बा
हिर आ या। मग ली क्व विनी ध। एराजा न उ जमाइ थयो। तउ पिण नीचनी बुद्धि आवन पुछकर। वली उपायमां सूझ उ। एक मायं
म पर देसी हुतु नेइ न इ सभा नी परइ कुजनमी षवी नइ ताहि इ रवाइ मुंकस उ। तिहां दर वा र ऊ पिनमइ दवी न इ गा इ इम ही दिती
इ वजु मां स उ। लोके इ जु उ। राजा यद्दुपि ण हकीं। तिवार इ डूब कहवा लागो। एमा रवाइ यु ण। दिल्ल उ वी कम्र। आज मइ न
जा दिदी वडो। कोर सखान इ राजा उ इण ने आ मेगा इलम भो को नेरा थ उ। राजा भाजन ली मतां री केकी थी। ते आ मा गीय सा इ हराकु
मन इक मे कनगायउ। तेह कुण कहइ। कुमर इ कल उ। पाणी पीए घर सबल उ आ पचे सु नइ कांदि इ बा उ। राजा इ मा रण वा करा ल
इ डूक मकी ध उ। एह नइ मारउ। कुमर इ कहिउ। तिवे मरा भुत कुल देषी ले उप। ते ओली आ चार्ड। कुमर इ हा के समा उ
का वी दी धा। कोइ मइ दत ना वइ। तिवी आ न उ परा ठाव ह इ। इमेर ज आ एक निमिती आ न इ पूछ उ। एकु ग उ ह निम त्ती य इ कुल
उप र ज पुत्री को। छिवइ राजा कुमर नइ पूछ उ। उतमा मत कुल कहे। कुमर कहे उहा मा काने पीवी न कर उ सउ। परणावेल
परदेसी दत रउ। नउ प धवल मो व वी हणते इ आ वा उ तिस्यो मइ हीनमो बेटी गइ तिस्यो न इ मा र उ कुल नइ स उ। राजा कन्या उ
प बा। ति हां जइ नइ रूपिपू व हणना कन्या श्री नइ सविवत माल उ। तीए दवी नइ जम के कि इ पकुल उ। एह वेराजा मन मइ
ती इ[illegible] हरी प्रवीन उ जागय पह वहन वरमा ल्यउ। राजा यस्ते मुंत्री वन बन्ध्र उ जा दीधइ सव वि वानधं वचनी कहीं मवा ला
अम्मुन २ वीमने ति ण मइ इम की ध उ। छिव इधवल नइ ह तदी वो रत न कारि व उ मा ल उ। कुमर इ मुंका 6

इ॥ बलीधदत्तकुमरसीधा तै मैत्री जा वध[illegible] सुं। तिणी दोस्त तिको [illegible] इति॥ उपकार ऊपर उपकार। प्रत्युपकार किंना
तिन [illegible]॥ नीच [illegible] पिन कुहू नो। उपगार करइ तिवेरई॥ २ एप्रकृते नहीं [illegible]॥ मित्र द्रोही [illegible]॥ २ सबने
मन मे वीनवइ। एक कुमर नगर [illegible] सिद्धि [illegible] एक [illegible] कुमरइ [illegible] राजी [illegible] एक नइ राति [illegible]
श्रीनीक लिउ [illegible]। एक [illegible] वीरा [illegible] कुमारिय [illegible] वदा[illegible]। कुमर [illegible]
उनी [illegible]। वीज [illegible] परनेप [illegible] करी। [illegible]
य[illegible] यइ परो नेतावी। ते [illegible] कुमर नइ दीधउ॥ [illegible]॥ धनवन्ति
पुत्र [illegible] रहै। एकदा [illegible] कुमर [illegible] विता [illegible]। एक [illegible] परदेसी [illegible]
[illegible] कुमर [illegible] कोई [illegible] तिकहइ। ते कुमर [illegible] राज [illegible]
किसी तेकहइ। [illegible] नगरी [illegible] पाव [illegible] कहुदी [illegible] तिहां [illegible] रहइ। तिहां मकरकेतरा
जा। कर्पूरतिलका राणी। ते हनइ [illegible] रूप [illegible] सुंदरी [illegible]। [illegible]। तिणइ प्रतिज्ञा कीधी छइ
[illegible] तिणइ [illegible] पइ। ते हनइ वरूं। कुमरइ सनन [illegible]॥ किम [illegible] तिहां नव
[illegible] धनना [illegible] विमलेश्वर [illegible] कुमर नइ [illegible]। तेहनउ [illegible]। जिहांकी [illegible]
[illegible] कुमर [illegible] तिहां [illegible] रूप [illegible]॥ [illegible]
[illegible] कुमर [illegible] रूप करी तिणइ [illegible] गया॥ उपा[illegible] रूपदेखी [illegible]
[illegible] तेकहइ [illegible]। बात [illegible] राजद्वार [illegible] ति
[illegible] करै यकाई ०॥ तिहां बीजा कन्या [illegible] कुमरी जी
नी। कुमरी [illegible] तेहनइ वरूं। ते कुमरी परणी। तिहां सुख [illegible] रहइ। एकसमइ [illegible] रिवनमें

इ

कहइ [illegible] गया। तिसे एक परदेसी मनुष्य [illegible] आ। कुहो कोई [illegible] देखो। तिवारइ ते [illegible] कहै। मइ
[illegible] कुमर [illegible] नगरी। वसुसेन राजा। [illegible] राणी। तेहनइ [illegible]
[illegible] सुंदरी बेटी। तिका वर प्राप्ति थइ। तिणइ राजा [illegible] मंडप [illegible]
[illegible] इसमुहु [illegible] वरइ [illegible]॥ [illegible]
[illegible] कुमर स्वयंवर मंडप [illegible] राखो। तिहां कुमरी वरमाला [illegible] नेवा [illegible] वरमाला [illegible] ति
[illegible] राजवी। [illegible] वरमाला [illegible] कुमर [illegible] देख्यु। [illegible]
[illegible]। राजा [illegible]। [illegible] करी [illegible] जमाई परणइ॥ [illegible]
रदेवी [illegible] हे कुमार। [illegible] राजा। ते [illegible] राणी॥ [illegible]
[illegible] ते हनइ पुत्र [illegible] पुत्री [illegible] वर प्राप्ति थइ पिता [illegible] स्वयंवर
[illegible] कन्या [illegible] तेहनइ वर्या। [illegible] कुमर [illegible]॥
तिहां कुमरी [illegible] कुमर [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ कुमर कहइ [illegible]
[illegible]। [illegible] वयार करि [illegible]॥ [illegible]
कहइ। [illegible]॥ [illegible]। तेहनइ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] कहि [illegible]। [illegible] तिका [illegible]
[illegible]॥ कुमर कहइ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] परणी॥ [illegible]
[illegible]। [illegible] परदेसी [illegible] आयउ। [illegible]

×[illegible]×

7

[illegible] ७

[illegible] ८

धउ। तउ कंइम तउंत्र तीर्थंकर देकउ। वगत वेदे ते किण ही वेदन्नी वेदज्ञ इसे दन्नी पीडन जाणे निलकांपण वीतरागे देविव उ
हीनिवंधपउ॥ श्लोकार्थ नो। बिणएकनइ अनरइ मनपरिणामनकिस्यु॥ अहोह मइ आकाल अनभणी किसुंवी तम्हउपा
पचविणा म। देखउ उंमा हरउमन दषनो हीजे हिपउ। जावें तइ म्पांस वा म्हे॥ विज्ञामसू नलीनैपुण देषिवी नही। तो म्ह
नावृंतनाधमनी माटी आपणा तणो कीधी। जिकावा तमइ सुहाणे हीन दीवी। होयइ वीत वीन ही। छम्वनी मेवा। पाहिली मइकी धीन
ली। तिकवा म्हीआ मस्त्रावी॥ धन्यपाल देव देवीनी जो गदे वीनइ दिगइ नही। ॐ अनो गणि हू नर इपं वी नइ मं ओ गदेवी मभरं ध्रु
लिषाधी॥ इस्तकादिनमा हरी जो का माहि मती पुणइ एक जीह पुजइ। पाहिली मिणी जे। तिरणपा पुष्प नवी तवलाउ यउ। इमा
दिनमाह रउकीलअस्र्वकन हुउ। हिवइ एमाल कीणक नोकदा विमु। तोङं पहुवउ मापणगट करी किणमातापिता आगइ कहुं।
ही नहीं कहुं तउ एह उथकां प्रेमी रवंधन नवूरह । धुकिन ही पामु। तउ एह श्री उपउ एरइ णाडपर इवा घ। काहिमकुं नरा हि
छं। वातवि ही तउ कोर॥ अथ वाइल त्रद्वी तवाइ मुनइ किमी आले यण एकमिम दोष मनमइवी तमपउ। इसभूतनती। किऊ। मकर
णीथीति हां थीपुरु समी दिआवी। आवतंपणो का हानी सुरकन्या मीलिया इपरगनजरा यइ। तिवारइ अनेमनमइ चीतवउ एत। ईसुरकन्या
लीपालइ रूपी आ घनवली यइ। तो पमा लामल र उ ना ता किंपुनी कल्ले। तो मुनेव इपन्डा। अथ भूमिदा वडे। हीये कांइ तमइ उ। एवा पनु
नइ लाम उ। हिवइ वलीमानपर्वतरइ ता किंपो इसवीन वइ छविता जालीनी मीनसुणेमाहि माहर उ निरमल तक कुं इमा हरु मुष
इक मकडं। अनइ कुला पषइ प मामत्र हइ। नेमाहिव इसुन आ गइ जइ वीजा नउना मलिइ। आकांय एहज वी मपकरे। कर्म खपावे
मेंवी जानइ कमा रउ। किमउ जफा मंपमो सम् कस्कर दं। एहवउ आलोचना परामन थकी घारका हामी। तपकरइ उ छठमइ मद सम
मइ वीउ मन स्थावर मतार्ध कीधा। पारण इनिवी मा मपाप ता मा तरघ्र पामवे आ बिलवली बंधा वसामइ रतावदकीधा॥ कआ कम्मक
दिकेकिआ कल्पकरत वजीमनमइवी तच्छउ मइ इलल इस्पा यश्चितं न। इसहीकलम्पा समकी धउमइ मनरउ भवलकाट उ उनहीमनी
भ्पापण उही मुरकइ। वीआरइक नेम्पात्र इवउ। जेहा इस्त्रअगिली रीपीइलेस्पा नकाटी नइ। नहीतरिण्हव नउवइ रतउ। लोका
आमालिक लो। तेहवउ पापमर्वं तीकब्ध। तो कमिंदा करइ। निणइ करी। तो कआ गइ आलोयउ। जिमइलीपनउपाप्स

×आविमरसाउ स्वमपावर तोबिणा४ ×कालवरस४ राजा

कंलीध उपाविमा रिकानउपिणा॥ इम श्री रट दोरु टवीत वती लक्षणाय समरणपामइ। सेरीरतनउरइ वेस्पानै घर रहें इड़ा दीमीपणां कुम
हिवइ रूपगुणन वस्पा थी अधिक पणइ। रत। मीनइ मउ तकोवतइ। नरइ कुडि णीउ अ पुत्र पमाहरा घर थी परीकाढ़। वलीमननभेवीन
मउपहि हजा यरतिहं वेउणी कउ वइ पेयुणवेती हिं दोउ अप्णवद्रं। मन्दिरवेचइ युणपयीलेइ। ये नवरिमण्या णा द्वाणवि
वहलह। हाइना श्रवउमनुष्यजन्म ववीकउ॥ इवुणी हिं हु आभी। अझनिणि भीमी जपरिहीणा। ऊणणी इवकुर कक रा सु विणीजमबुर
णीइआ॥ २ तकुटिणी वलीदमउणए उइ एनै वेदी मघइं जे रा छं। अथवा एरु नउ कानना का र छं। परु वउम्बी न वीतवेस्पा मूली। तिमें बेड
उानेकिणाक अंतर एक पकर जाणा वे सुमनामक वउ जीली नितां थीन वी उमहीना नमनी फिरती मैं खेडमा मइ भूली एकणि कुल
पुत्रक हिनवा वीणइ रामी ममी पुणइ। हिवु तेहनी मूलगी स्त्री यइ अमना वत्रआणी आ। नइ वियावइ। एक इमा निला। बिहुं पममे वेस्पार
लो। विमषत्र मपत्रीना। मरल वे हि उरन्जि॥ एक परवइ इश्यावरनी इद्वुतीजणी। तेथुणी घरे नकातउ तिणइ जम उश्यकरी थाति
भ्पानवधी। जिमजी वनीन रहइति मउमरा णेमेनी वे दीवरी नेघी। नमप्यमो कुलवुत्रक एवा तइ छिदी। मैं वेमाइन्वी रिवेस्पि
लनापीवे तपमजम करी। कर्मखपावी सुगतिगयउ। हिवइ ते लरकाण नउजी वबली मैं सबघणा करी वैतां उपवतिअमी पइहि
याध ट कुलम्बक वाविधघर स्त्री र नपणइ जाइ। नेपुणा कामसुमन ने पावीं छ डीनकुइ थवीजपनी। तिहां वेदनी दुगती सु नीव
णइ कुपनी। मैथुन सं जो से रही नी जइ वी पइ समइ करी। तिहां थी मरी वेस्पा कुलि ऊपनी॥ इम कोइ कालि वनमती। दलइ तु
ब्रतिखा। व्याधि वेदना व धवंधन घणा इ पदेषु ती तिवार पछी छंदे वी। वलेवा पूणी वलेवी मुंइ दवी। भिभपछी ध्यान नवमाहि
पणउ। मनुष्यपणउ नरक इवली आ काणी पइ अडीनर क इवली जव जाणी ध्या णिनि फेरी एक नमइ इकवउ। पणइ ऊपनी। माल
को कुमइ हाने दनी कउ घणी दरिद्रणी विधि इजमनी किम मूलउ जघ नीजा मइ विपक रहती। शीलना पहनी एकाति विद्व दीठ
ना नउके कदीधु इति हनीपी इपसती॥ तिमइ सुरक नवइ अजउ व नश्री पद्म नी सती यक विहार करतां पामवगलो। नगदेउ
होविवरहूति हां गमीगी ऊ वानइ प्रव त्र इ नहीं। बउत्री मसविनाहिन। पमक्रमया विराजमान। ब्राम्परव वादानिली। देसनाद
ताडव ईवमइ रणकुं ववा वी दीडमबकि मेंशूया। नवजणी ति हुन सर्वनाहु पाक मुडाला गव तइ। तीयइ डी थाल्पीधी।
तयउपक्रिया कनी। आलोयण लेइ। मानउधरी। कर्मखपावी। लरकाण जीव कुवनी मपा इ उत्तानिगइ॥

९

[illegible] 9

[illegible] 10

नइ आयन थकारहइ।। हिवइ तिसै श्रमणा वइ एकदा मारग वहता। ऊता थका साधु तिणे वेले आव्या तिहां सुझ सिरी इसु दीना। गो
वरी करता थका। साधु ताहइ थका देषी मनमइ घणउ कुषकी धुठा। राबालागी।। सुझ सामि वसु इमा मुझ इसि कइहे प्रियानइ किसका
रति मनमइ कुछ आलपेउ। अहो स्वामी सुनइ बाला पुणानउ स्वरूप बीना आवीउ। माहरी स्वामिणी इस्यउ धानइ आमक सकारवे
उन उ पथ्य सासी धारहा। पीहवाट जइ साध नमानि करती। नमती वंदती। विनय धरती। तिवारइ ओ प्रिण तियइस्या। थइ इम विन
यकरती। नपमाधु ऊगत दषी सुनइ बोलीपणानमं सन्धउ निण सुतइ तिवास्युं तम्रव एकइ ताहरी स्वामिणी कुणानि वार घेट सूत
आवानकही। तिवारइ सुण मनमइ ऊलपेन पूणी हरी भत्री। [illegible] नदी। तबिचीता गउ ऊंनाणी यउ। एकि पुं कणे ऊनउ। तादवि धात्रा मउ।
सुपउ वातआ किल मनमनवकी ऊंनी पिकाऊंडे। तौ ऊंमीहा पानकै सूत्यो पापकादमै लपटै। ओकाया आगनि [illegible] ऊलूं। थवा
आकाया तिल२ का पीहूनम भुमेती बीबीनइ अगनि होमुं। पर्वत स्वदे। ऊं पापातक कर्म काया पीसविषे नथायइ। ऽ पव घूण [illegible] मागरमती का
या स्ट्टी का पमली कुर्द। ऽ थका या करवतिमती का दनी पारिविनतनु। ऽ थरै मरम्पुइ अगनि वृतणी घालुं। ऽ थइ समुद्र मूत्रु। घा
वमी घाते दही बोलुं। इम चीतवतउ बती विरी मसउ। आगि पछइ मा हरी पकुण बोलइ। एहवउ विवारी लोकमा मन बानकही। एमा
हरी पुत्री मे वेची ऊंती। तेऊं आगी यउ मे परणी। ते भवस्नइ। तउहि वूरत तेह माहरउ वचन मांनतलेउ। लोकों लोकपालो मा सादि तम्ही मा
श्लोक ४ समा हे को ह पापी नही। जिणे लोके प्याइ निजाणीप सूकन्या जीबी मा कुलमी लपजाणेर मउ ते पुरुष उत्तम। एमालो बाहिन। वेटी। अने
पहाम घाते मै ओगथ्या। यइ तमउ वि धीआ नइ स्वमइ विषइ वालस्थ कउ। तिको मइ एवा नकीधा मइ माहरउ आतमा नरक घूरमा
कूपा ही। तिणइ माहरउ आपि पाप अगनि पषइ मही ऊतरइ। बीअउ कोइ प्रायश्चित्त नही। पुरुष [illegible] तडी गाम बाहिर माटी वहिवण
वी। अगर चंदण इंधण मेली तिण वहि माहे पइठी आपणो आप मालो कोप आगइ निंदतउ। हिवइ अगनि दीधी छइ तमइ मुंकती मीवी
घणाउ पावकी धा। पिण अगनि बलै नही। तापापी इच्छ निकिछइ विछ गयानता मित्रा। तेहनइ मोटउ पापु जो गमइदे आवइ। आपि
पिण आदरइ नही। जीवउ नपिण नबायइ। इमतो कमाले निदापा मनउ वा हिरनै की प्पउ लोके धिकार तिरस्क भकरतो
भीख हिनगामयकी परकाढ्यु। तो का तो नमन न वेनरक छइ स्यामि तिन वल्पेउ कि नस्वयमान इ। एहवउ तेवनव्यगा जोहो १०
हिवइ ते आगइ जाता साधु मैं घाल उदीठा। पाणी जातेइ नइ ऊ। यछ ठाइहि यापा पइ थया वनमइ भूहतो। आगइ सुरुवे

गाछो जगदा नै स्वरिना। मै पापिष्टा तन्माधरण हारा। तेदेषी साव माहि तऊत तमाश्रावी पगेलागी नइ कहै। स्वामी मुनइ पापसु छियावइ
तिका बात कहउ। अहो स्वामी नहे वीतरा गठो। पामइ श्री। [illegible] गइ सुइरा। तियारी वातमो नली मन परिणाम तो पीठु कछइ।।
अहो वइ संसार मइ अनेक प्रकार कर्म रइ वसइ पाप छन्मनउ ठइनही। जे को [illegible] नेसुगति छइ हीऊ। जउ कर्म रइ वसइ कदाचि अवसुलकु
मकीधउ। तेमुद्धि कि दिवी गुरुस्वामी पइ। जिम शरीर मल रूप रसउ पाणी धोवउ। तिम पापमल आलोयणइ उतरइ। जिम प्रमाणउ आनि
मइत पाप्यउ शुद्धि कुंदण ऊंवइ। जिमतो कहो तपा वी पवनी कलै। जिम सूरहीठ पायउ ऊजलउ थायइ। तिम अरहामहा सुवाव
वाजे। आइं कारस्तोत्री। सर्वपाप प्रकट करै तीऊली नी पर रूढ वके मेकहो। दिवोला। तिवारइ ते पुरुष कहइ। सा हि तसु स्वामी। पिकहइ
[illegible] ऊमइ स्पेदी नथउ। एबालिका मारे नरतखी। पछइ एवेवी। वुलमइ बीजो कुन्माउ पा कलनइ वेची। कोकोनी। बली पाउ पुत्री मइपरणी।
अनेरा बालपणा थकी ते ऊ पापलागा ऊतेह नेपिण मेला हिनइ पर्वत रा आगि कलापनपणइ। तिवारइ पछै सूर पाणउ। पउइ
नकरी सवैगी जाप्पउ। पाइश्चित्त जिम गुरीदी धउ तेतली धउ। सर्वथा नतपवी रित्रिनी आगी का कीध। गुरुलुक्षि मोहिन। मनमइ जा
एपउ। ए सर्व विपनम्पठे। हिवइ स्वामकिलमा हितमा टइ सो वेगवे रागइ कलउ। मीमुनइ [illegible] नित्रथा आत्मायनिइ पिण तिवारइ सुरेक ×३३
उ पण्ड्रीयो विलीनदीसा अजोप्प प्रायश्चित्त पिण नदि वरायइ। हिवइ सुझ सोविवइ दीक्षोलीधी। पहलां श्री सेवीन। एकै उंपी धतउ नरे
षका। निआलो घण प्रभुवमाटा नपकरी। कर्मक्षय कीधा। तपी मी तपकीधा। उग्र मइ माफी दहीते आबी यं आयु विचरत [illegible]
वीमवरसेनइ दिनस्वा रित्रपाली। विपिसेनी निरइ छणपणइ। पादपगमन अणसण करी। शैतकवली थइ मुगति पुहतो। सुझ श्रमव
हिवइ गाल गइ स्वइ। स्वामी एहवउ पाप कीसुगति गयो। तगर्व तकहइ। आलोइ मन वपापसु ध थइ सुगति गयउ। गुरुदीनवुद्ध
यविन्नि तेणइ कीधइ।। हिवइ स्वामी श्रमणा मिरी किम थई। जम वैतकहे। तिण थी पापालोऊ नइ स्थानाकि नरही। तिहां रहती जिण
नइ धम पवनउ स्मापथ नइ छउ थउ तेम नही णइ मनमइ ऊरथ्या। नबीन वथउ एगाधी घण पारदइ पाकि ली ते यउ घणु सो इकाल करे
तवती। सोप्पउ प्रजातपकामक स्मुतिम्पिनरा नेइठो इ संयम वध्यउ। ते श्रमवकालइ मलका ऊगइ सरणपामी। मरी नइ छवी
नरकपृथ्वी गई अनुवंधा नइ। हिवइ हतको लकऊ। राजालवी द्वइ ज्ञानमात्र कूतिरहली धउ तिगइ सुतन इकरी कुंभारवरे स्वाक
ऊपविमुक्तउ तिणे तो वितान ऊआ। तिगे ऊन रिघरधणी स्मामसउ। ते बालक लेइ [illegible] पाणी स्नीनइ दीधउ। ओ पतनइ एपरभा 11

रह्वउ। क्रूपरवाहै वूठउ। सघत्री ध्यांनै ऊग्रदी धउ। सा पण उकारि जिनी थउ। तादेकारी छी थउ। जनमसहोछव की थउ। सुम्य उन्मो
नामदीधउ। अनुक्रमइ बालपण उल्लंघी मोटउ थयउ। सकल कला शिक्षित परिणीयो मगउ॥ एकदा प्रसताव इ। मोटा महत्तुला
[illegible] इम। दुसम हुवा लक्षण। पश्च मांस तपकरतउ शुक्र ध्यांनै सेवाकरतउ शुक्ल ध्यांन [illegible] करी ऊपना। वारित्र लीधउ। तपकरतइ
काल गउ। तिवारइ शुक्र कहिवा लागा हव छो। उत्पत्ति पषइ ऊपत पनीयम ध्यांय सर्व धर्म हितनो कारण तुहवइ। धर्मनिश्चय धूउजे
[illegible] लक्ष्मी करि। इम घणा हि उपदेस दीधा [illegible] इत्यस्मउ। बोला सा गइरगयउ। [illegible] यापाप घइत धी। पुह वृद्ध पुण्य
लीनाली नइ सूकी। स्त्रीलह। वली सा फल मासा करी स्त्रिय लपण इ प्रवज्रेश पुरे वली काल उक्त सुत जउ जइ एप्ये तप कर उन
इ वदान ववियाधर से वइ। तिक्रूरपर्वपगे जाणे पर लोक देवगति पुण्यपापै मह। तउ पिण त्रिय प्रपुण्य पुण्य काहै समर्थ दइ
वालेउ उपाय णण पषइ तप की धइमिफ वईके। उत्तम का कनीलू। नस्मिरा निकाल। तोपिण इसही ऊपित्थ लपण श्रवनइतो
पाणी पीय। इस्थ स्वप केउ रा उवन सप तीर्थ वधाव रजी वनीत यु पात करइ इपुरे दीक्षीसा जो यण प्रायश्चित्त करइ। पापा
श्रवर्क धइन ही विष्याय न करे मूर्षपणै आपणा तोत्र संवरइ। तिवार इस्युं उपांन इत्यो करनि दइ तिवार इस्या म दइ समन इत्सी
लयतपईमापरइ न सइ कांलिमपुरे हीतपयइ लइ। तमा ऊ उपरांत नो महीनपतउ पुत्र फैकाल्पि पुरे गइ पपकीबाहिइ
कामी रइ। तेणि पवा नो वइ त्सा पछे दइ तपवणा हो करी समइ मरी कोटी विष्णइ इम मान नेनिय धर्म जोपयउ दवाने के
सिध मुंई। तिर्यो श्रीवबी एण नरपपूरवायदे तु थयउ मरी नइ सीतमी नरक जाम्य इ। तिहो पीमरीहा थी नव पामी न
सुनर पे वत्सा मन रूप पकौ मरी ऊनैन का घमैजपजसी। तउ एतलीत पकीधा मेपि शासनै तसी आर तमसी॥ उ
त मपूर्व स्वामी एह वात पकर तो पिण कोइ नाम्य उ। नाग वैन कले पुरउ गुणउन नेनगु णम सा दके न ही उपणा न कीधा तिण
इ सीक्षा मन जमसी॥ एह वउ उत्तीतपम यम इ उपणा कविवीषमा ए सुं बंधे दृष्टीसघ पकी कापुरु॥ श्री बुद्ध
२ ३ पेम्म्लु दिन को मे। वा- श्री न यस्मो मा लति मेंदिरम्या थलि जिते॥ एरत रगळे॥ पाली नगरे॥ श्री: १२